शिव अमृतवाणी

शिव अमृतवाणी
॥ भाग १ ॥

कल्पतरु पुन्यातामा,
प्रेम सुधा शिव नाम
हितकारक संजीवनी,
शिव च ंतन अववराम
पततक पावन जैसे मधुर,
शिव रसन केघोलक
भक्तत केिंसा िी ुगे,
मोती ये अनमोल
जैसे ततनक सुिागा,
सोने को मकाए
शिव सुशमरन से आत्मा,
अद्भुत तनखरी जाये
जैसे न्दन वृक्ष को,
डसते निीं िै नाग
शिव भततो के ोले को,
कभी लगे न दाग
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय !

दयातनचध भूतेश्वर,
शिव िै तुर सुजान
कण कण भीतर िै बसे,
नील कंठ भगवान
ंद्र ूड केत्रिनेि,
उमा पतत ववश्वास

िरणागत केये सदा,
काटे सकल तलेि
शिव द्वारे प्रपं का,
ल निीं सकता खेल
आग और पानी का,
जैसे िोता निीं िै मेल
भय भंजन नटराज िै,
डमरू वाले नाथ
शिव का वंधन जो करे,
शिव िै उनकेसाथ

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय !

लाखो अश्वमेध िो,
सौ गंगा स्नान
इनसे उत्तम िै कि,
शिव रणों का ध्यान
अलख तनरंजन नाद से,
उपजे आत्मज्ञान
भटकेको रास्ता शमले,
मुक्श्कल िो आसान
अमर गुणों की खान िै,
च त िुद्चध शिव जाप
सत्संगतत में बैठ कर,
करलो पश् ाताप
शलंगेश्वर केमनन से,
शसद्ध िो जाते काज

नमः शिवाय रटता जा,
शिव रखेंगे लाज

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय !

शिव रणों को छूने से,
तन मन पावन िोये
शिव केरूप अनूप की,
समता करे न कोई
मिाबशल मिादेव िै,
मिाप्रभु मिाकाल
असुराणखण्डन भतत की,
पीडा िरे तत्काल
सव व्यापी शिव भोला,
धमव रूप सुख काज
अमर अनंता भगवंता,
जग केपालन िार
शिव करता संसार के,
शिव सृक्टट केमूल
रोम रोम शिव रमने दो,
शिव न जईओ भूल

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय !
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय !
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय !

॥ भाग २ - ३ ॥

शिव अमृत की पावन धारा,

धो देती िर कटट िमारा
शिव का काज सदा सुखदायी,
शिव केत्रबन िै कौन सिायी
शिव की तनसहदन कीजो भक्तत,
देंगे शिव िर भय से मुक्तत
माथे धरो शिव नाम की धुली,
टूट जायेगी यम कक सूली
शिव का साधक दुःख ना माने,
शिव को िरपल सम्मुख जाने
सौंप दी क्जसने शिव को डोर,
लूटे ना उसको पां ो ोर
शिव सागर में जो जन डूबे,
संकट से वो िंस केजूझे
शिव िै क्जनकेसंगी साथी,
उन्िें ना ववपदा कभी सताती
शिव भततन का पकडे िाथ,
शिव संतन केसदा िी साथ
शिव ने िै बृह्माण्ड र ाया,
तीनो लोक िै शिव कक माया
क्जन पे शिव की करुणा िोती,
वो कंकड बन जाते मोती
शिव संग तान प्रेम की जोडो,
शिव के रण कभी ना छोडो
शिव में मनवा मन को रंग ले,
शिव मस्तक की रेखा बदले
शिव िर जन की नस-नस जाने,
बुरा भला वो सब पि ाने

अजर अमर िै शिव अववनािी,
शिव पूजन से कटे ौरासी
यिाँ-विाँ शिव सव व्यापक,
शिव की दया केबतनये या क
शिव को दीजो सच् ी तनटठा,
िोने न देना शिव को रुटटा
शिव िै श्रद्धा केिी भूखे,
भोग लगे ािे रूखे-सूखे
भावना शिव को बस में करती,
प्रीत से िी तो प्रीत िै बढ़ती
शिव किते िै मन से जागो,

प्रेम करो अभिमान त्यागो

॥ दोहा ॥

दुनिया का मोह त्याग के
शिव में रहिये लीन ।
सुख-दुःख हानि-लाभ तो
शिव के ही है अधीन ॥

भस्म रमैया पार्वती वल्लभ,
शिव फलदायक शिव है दुर्लभ
महा कौतुकी है शिव शंकर,
त्रिशूलधारी शिव अभयंकर
शिव की रचना धरती अम्बर,
देवो के स्वामी शिव है दिगंबर
काल दहन शिव रूण्डन पोषित,
होने न देते धर्म को दूषित

दुर्गापति शिव गिरिजानाथ,
देते है सुखों की प्रभात
सृष्टिकर्ता त्रिपुरधारी,
शिव की महिमा कही ना जाती
दिव्य तेज के रवि है शंकर,
पूजे हम सब तभी है शंकर
शिव सम और कोई और न दानी,
शिव की भक्ति है कल्याणी
कहते मुनिवर गुणी स्थानी,
शिव की बातें शिव ही जाने
भक्तों का है शिव प्रिय हलाहल,
नेकी का रस बाटँते हर पल
सबके मनोरथ सिद्ध कर देते,
सबकी चिंता शिव हर लेते
बम भोला अवधूत सवरूपा,
शिव दर्शन है अति अनुपा
अनुकम्पा का शिव है झरना,
हरने वाले सबकी तृष्णा
भूतो के अधिपति है शंकर,
निर्मल मन शुभ मति है शंकर
काम के शत्रु विष के नाशक,
शिव महायोगी भय विनाशक
रूद्र रूप शिव महा तेजस्वी,
शिव के जैसा कौन तपस्वी

हिमचगरी पवत शिव का डेरा,
शिव सम्मुख न हटकेअंधेरा
लाखों सूरज की शिव ज्योतत,

िस्िोंमें शिव उपमान िोती
शिव िैजग केसृजन िारे,
बंधु सखा शिव इटट िमारे
गौ ब्राह्मण केवे हितकारी,
कोई न शिव सा पर उपकारी

॥ दोिा ॥

शिव करुणा केस्रोत िै
शिव से कररयो प्रीत ।
शिव िी परम पुनीत िै
शिव सा ेमन मीत ॥

शिव सपो केभूिणधारी,
पाप केभक्षण शिव त्रिपुरारी
जटाजूट शिव ंद्रिखर,
ववश्व केरक्षक कला कलेश्वर
शिव की वंदना करने वाला,
धन वैभव पा जाये तनराला
कटट तनवारक शिव की पूजा,
शिव सा दयालु और ना दूजा
पं मुखी जब रूप हदखावे,
दानव दल में भय छा जावे
डम-डम डमरू जब भी बोले,
ोर तनि र का मन डोले
घोट घाट जब भंग ढ़ावे,
तया िैलीला समझ ना आवे
शिव िैयोगी शिव सन्यासी,

शिव िी िैकैलास केवासी
शिव का दास सदा तनभीक,
शिव केधाम बडे रमणीक
शिव भृकुहट से भैरव जन्मे,
शिव की मूरत राखो मन में
शिव का अ वन मंगलकारी,
मुक्तत साधन भव भयिारी
भतत वत्सल दीन दयाला,
ज्ञान सुधा िैशिव कृपाला

शिव नाम की नौका िै न्यारी,
क्जसने सबकी च ंता टारी
जीवन शसंधु सिज जो तरना,
शिव का िरपल नाम सुशमरना
तारकासुर को मारने वाले,
शिव िै भततो केरखवाले
शिव की लीला केगुण गाना,
शिव को भूल केना त्रबसराना
अन्धकासुर से देव ब ाये,
शिव ने अद्भुत खेल हदखाये
शिव रणो से शलपटे रहिये,
मुख से शिव शिव जय शिव कहिये
भाटमासुर को वर दे डाला,
शिव िै कैसा भोला भाला
शिव तीथो का दिवन कीजो,
मन ाि े वर शिव से लीजो

॥ दोिा ॥

शिव िंकर केजाप से
शमट जाते सब रोग ।
शिव का अनुग्रि िोते िी
पीडा ना देते िोक ॥

ब्रिमा ववटणु शिव अनुगामी,
शिव िै दीन िीन केस्वामी
तनबवल केबलरूप िै िम्भु,
प्यासे को जलरूप िै िम्भु
रावण शिव का भतत तनराला,
शिव को दी दस िीि कक माला
गव से जब कैलाि उठाया,
शिव ने अंगूठे से था दबाया
दुःख तनवारण नाम िै शिव का,
रत्न िै वो त्रबन दाम शिव का
शिव िै सबकेभाग्यववधाता,
शिव का सुशमरन िै फलदाता
शिव दधीच केभगवंता,
शिव की तरी अमर अनंता
शिव का सेवादार सुदिवन,
सांसे कर दी शिव को अपवण

िमादेव शिव औघडदानी,
बायें अंग में सजे भवानी
शिव िक्तत का मेल तनराला,
शिव का िर एक खेल तनराला
िम्भर नामी भतत को तारा,
न्द्रसेन का ििोक तनवारा

वपंगला ने जब शिव को ध्याया,
देि छूटी और मोक्ष पाया
गोकणव की न ूका अनारी,
भव सागर से पार उतारी
अनसुइया ने ककया आराधन,
टूटे च न्ता केसब बंधन
बेल पत्तो से पूजा करे ण्डाली,
शिव की अनुकम्पा िुई तनराली
माकवण्डेय की भक्तत िै शिव,
दुवावसा की िक्तत िै शिव
राम प्रभु ने शिव आराधा,
सेतु की िर टल गई बाधा
धनुिबाण था पाया शिव से,
बल का सागर तब आया शिव से
श्री कृटण ने जब था ध्याया,
दस पुिोंका वर था पाया
िम सेवक तो स्वामी शिव िै,
अनिद अन्तयावमी शिव िै

॥ दोिा ॥

दीन दयालु शिव मेरे,
शिव केरहियो दास ।
घट घट की शिव जानते,
शिव पर रख ववश्वास ॥

परिुराम ने शिव गुण गाया,
कीन्िा तप और फरसा पाया

तनगुवण भी शिव शिव तनराकार,
शिव िै सृक्टट केआधार
शिव िी िोते मूततवमान,
शिव िी करते जग कल्याण
शिव में व्यापक दुतनया सारी,
शिव की शसद्चध िै भयिारी

शिव िै बाि र शिव िी अन्दर,
शिव िी र ना सात समुन्द्र
शिव िै ि र इक मन केभीतर,
शिव िै ि र एक कण कण केभीतर
तन में बैठा शिव िी बोले,
हदल की धडकन में शिव डोले
ि म कठपुतली शिव िी न ाता,
नयनों को पर नजर ना आता
माटी केरंगदार खखलौने,
साँवल सुन्दर और सलोने
शिव िी जोडे शिव िी तोडे,
शिव तो ककसी को खुला ना छोडे
आत्मा शिव परमात्मा शिव िै,
दयाभाव धमावत्मा शिव िै
शिव िी दीपक शिव िी बाती,
शिव जो निीं तो सब कुछ माटी
सब देवो में ज्येटठ शिव िै,
सकल गुणो में श्रेटठ शिव िै
जब ये ताण्डव करने लगता,
बृह्माण्ड सारा डरने लगता
तीसरा क्षु जब जब खोले,

िाहि-िाहि यि जग बोले
शिव को तुम प्रसन्न िी रखना,
आस्था लग्न बनाये रखना
ववटणु ने की शिव की पूजा,
कमल ढाऊँ मन में सूझा
एक कमल जो कम था पाया,
अपना सुंदर नयन ढ़ाया
साक्षात तब शिव थे आये,
कमल नयन ववटणु किलाये
इन्द्रधनुि केरंगो में शिव,
संतो केसत्संगों में शिव

॥ दोिा ॥

मिाकाल केभतत को,
मार ना सकता काल ।
द्वार खडे यमराज को,
शिव िै देते टाल ॥

यज्ञ सूदन मिा रौद्र शिव िै,

आनन्द मूरत नटवर शिव िै
शिव िी िै शिमान केवासी,
शिव काटें मृत्युलोक की फांसी
व्याघ्र रम कमर में सोिे,
शिव भततों केमन को मोिे
नन्दी गण पर करे सवारी,
आहदनाथ शिव गंगाधारी
काल केभी तो काल िै िंकर,

वविधारी जगपाल िै िंकर
मिासती केपतत िै िंकर,
दीन सखा िुभ मतत िै िंकर
लाखो िशि केसम मुख वाले,
भंग धतूरे केमतवाले
काल भैरव भूतो केस्वामी,
शिव से कांपे सब फलगामी
शिव िै कपाली शिव भटमांगी,
शिव की दया िर जीव ने मांगी
मंगलकताव मंगलिारी,
देव शिरोमखण मिासुखकारी
जल तथा ववल्व करे जो अपवण,
श्रद्धा भाव से करे समपवण
शिव सदा उनकी करते रक्षा,
सत्यकमव की देते शिक्षा
शलंग पर ंदन लेप जो करते,
उनकेशिव भंडार िैं भरते
६४ योगनी शिव केबस में,
शिव िै नाते भक्तत रस में
वासुकक नाग कण्ठ की िोभा,
आुतोि िै शिव मिादेवा
ववश्वमूततव करुणातनधान,
मिा मृत्युंजय शिव भगवान
शिव धारे रुद्राक्ष की माला,
नीलेश्वर शिव डमरू वाला
पाप का िोधक मुक्तत साधन,
शिव करते तनदवयी का मदवन

।। दोिा ।।

शिव सुमररन केनीर से,
धूल जाते िै पाप ।

पवन ले शिव नाम को,
उडते दुख संताप ॥

पं ाक्षर का मंि शिव िै,
साक्षात सवेश्वर शिव िै
शिव को नमन करे जग सारा,
शिव का िै ये सकल पसारा
क्षीर सागर को मथने वाले,
ऋद्चध-शसद्चध सुख देने वाले
अिंकार केशिव िै ववनाि‍क,
धमव-दीप ज्योतत प्रकाि‍क
शिव त्रबछुवन केकुण्डलधारी,
शिव की माया सृक्टट सारी
मिानन्दा ने ककया शिव च न्तन,
रुद्राक्ष माला ककन्िी धारण
भवशसन्धु से शिव ने तारा,
शिव अनुकम्पा अपरम्पारा
त्रि-जगत केयि िै शिवजी,
हदव्य तेज गौरीि िै शिवजी
मिाभार को सिने वाले,
वैर रहित दया करने वाले
गुण स्वरूप िै शिव अनूपा,
अम्बानाथ िै शिव तपरूपा

शिव ण्डीि परम सुख ज्योतत,
शिव करुणा केउज्ज्वल मोती
पुण्यात्मा शिव योगेश्वर,
मिादयालु शिव िरणेश्वर
शिव रणन पे मस्तक धररये,
श्रद्धा भाव से अ वन कररये
मन को शिवाला रूप बना लो,
रोम-रोम में शिव को रमा लो
माथे जो भतत धूल धरेंगे,
धन और धन से कोि भरेंगे
शिव का बाक भी बनना जावे,
शिव का दास परम पद पावे
दिों हदिाओं मे शिव दृक्टट,
सब पर शिव की कृपा दृक्टट
शिव को सदा िी सम्मुख जानो,
कण-कण बी बसे िी मानो
शिव को सौंपो जीवन नैया,
शिव िै संकट टाल खखवैया

अंजशल बाँध करे जो वंदन,
भय जंजाल केटूटे बन्धन

॥ दोिा ॥

क्जनकी रक्षा शिव करे,
मारे न उसको कोय ।
आग की नहदया से ब े,
बाल ना बांका िोय ॥

शिव दाता भोला भण्डारी,
शिव कैलाशी कला त्रबिारी
सगुण ब्रह्म कल्याण कताव,
ववघ्न ववनािक बाधा िताव
शिव स्वरूवपणी सृक्ष्ट सारी,
शिव से पृथ्वी िैउक्जयारी
गगन दीप भी माया शिव की,
कामधेनु िैछाया शिव की
गंगा में शिव, शिव मे गंगा,
शिव केतारे तुरत कुसंगा
शिव केकर में सजे त्रिशूला,
शिव केत्रबना ये जग तनमूवला
स्वणवमयी शिव जटा तनराळी,
शिव िम्भू की छटा तनराली
जो जन शिव की महिमा गाये,
शिव से फल मनवांतछत पाये
शिव पग पाँकज सवगव समाना,
शिव पाये जो तजे अशभमाना
शिव का भतत ना दुःख मे डोलें,
शिव का जादू शसर ढ बोले
परमानन्द अनन्त स्वरूपा,
शिव की िरण पडे सब कूपा
शिव की जवपयो िर पल माळा,
शिव की नजर मे तीनो काला
अन्तर घट मे इसे बसा लो,
हदव्य जोत से जोत शमला लो
नम: शिवाय जपे जो स्वासा,

पूरीं िो िर मन की आसा

॥ दोिा ॥

AartiPooja.com

परमवपता परमात्मा,
पूरण सक्च् दानन्द ।
शिव केदिवन से शमले,
सुखदायक आनन्द ॥

शिव से बेमुख कभी ना िोना,
शिव सुशमरन केमोती वपरोना
क्जसने भजन िै शिव केसीखे,
उसको शिव िर जगि िी हदखे
प्रीत में शिव िै शिव में प्रीती,
शिव सम्मुख न ले अनीतत
शिव नाम की मधुर सुगन्धी,
क्जसने मस्त ककयो रे नन्दी
शिव तनमवल तनदोि तनराले,
शिव िी अपना ववरद संभाले
परम पुरुि शिव ज्ञान पुनीता,
भततो ने शिव प्रेम से जीता

॥ दोिा ॥

आंठो पिर आराचधए,
ज्योततशलिंग शिव रूप ।
नयनं बी बसाइये,
शिव का रूप अनूप ॥

शलंग मय सारा जगत िैं,

शलंग धरती आकाि
शलंग च ंतन से िोत िै,
सब पापो का नाि
शलंग पवन का वेग िै,
शलंग अक्ग्न की ज्योत
शलंग से पाताल िै,
शलंग वरुण का स्िोत
शलंग से िैं वनस्पतत,
शलंग िी िैं फल फूल
शलंग िी रत्न स्वरूप िैं,
शलंग माटी तनधूवप

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय !

शलंग िी जीवन रूप िैं,
शलंग मृत्युशलंगकार
शलंग मेघा घनघोर िैं,
शलंग िी िैंउप ार
ज्योततशलिंग की साधना,
करते िैंतीनो लोग
शलंग िी मंि जाप िैं,
शलंग का रूम श्लोक
शलंग से बने पुराण िैं,
शलंग वेदो का सार
ररचधया शसद्चधया शलंग िैं,
शलंग करता करतार
प्रातकाल शलंग पूक्जये,

पूणव िो सब काज
शलंग पे करो ववश्वास तो,
शलंग रखेंगे लाज

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय !

सकल मनोरथ से िोत िैं,
दुखो का अंत
ज्योततशलिंग केनाम से,
सुशमरत जो भगवंत
मानव दानव ऋविमुतन,
ज्योततशलिंग केदास
सव व्यापक शलंग िैं,
पूरी करे िर आस
शिव रुपी इस शलंग को,
पूजे सब अवतार
ज्योततशलिंगों की दया,
सपने करे साकार
शलंग पे ढ़ने वैद्य का,
जो जन ले परसाद
उनकेहृदय में बजे,
शिव करूणा का नाद

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय !

महिमा ज्योततशलिंग की,
जाएंगे जो लोग

भय से मुक्तत पाएंगे,

रोग रिं न िोब
शिव के रण सरोज तू,
ज्योततशलिंग में देख
सव व्यापी शिव बदले,
भाग्य तीरे
डारीं ज्योततशलिंग पे,
गंगा जल की धार
करेंगे गंगाधर तुझे,
भव शसंधु से पार
च त शसद्चध िो जाए रे,
शलंगो का कर ध्यान
शलंग िी अमृत कलि िैं,
शलंग िी दया तनधान

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय !

॥ भाग ४ - ५ ॥

ज्योततशलिंग िै शिव की ज्योतत,
ज्योततशलिंग िै दया का मोती
ज्योततशलिंग िै रत्नों की खान,
ज्योततशलिंग में रमा जिान
ज्योततशलिंग का तेज़ तनराला,
धन सम्पतत का देने वाला
ज्योततशलिंग में िै नट नागर,
अमर गुणों का िै ये सागर
ज्योततशलिंग की कीजो सेवा,
ज्ञान पान का पाओगे मेवा

ज्योततशलिंग िै वपता सामान,
सक्टट इसकी िै संतान
ज्योततशलिंग िै इटट प्यारे,
ज्योततशलिंग िै सखा िमारे
ज्योततशलिंग िै नारीश्वर,
ज्योततशलिंग िै शिव ववमलेश्वर
ज्योततशलिंग गोपेश्वर दाता,
ज्योततशलिंग िै ववचध ववधाता
ज्योततशलिंग िै िरेंडश्वर स्वामी,
ज्योततशलिंग िै अन्तयावमी
सतयुग में रत्नो से िोशभत,
देव जनो केमन को मोहित

ज्योततशलिंग िै अत्यंत सुन्दर,
छत्ता इसकी ब्रह्माण्ड अंदर
िेता युग में स्वणव सजाता,
सुख सूरज ये ध्यान ध्वजाता
सतल सृक्टट मन की करती,
तनसहदन पूजा भजन भी करती
द्वापर युग में पारस तनशमवत,
गुणी ज्ञानी सुर नर सेवी
ज्योततशलिंग सबकेमन को भाता,
मिमारक को मार भगाता
कलयुग में पाचथवव की मूरत,
ज्योततशलिंग नंदकेश्वर सूरत
भक्तत िक्तत का वरदाता,
जो दाता को िंस बनता
ज्योततशलिंग पर पुटप ढ़ाओ,

केसर न्दन ततलक लगाओ
जो जन करें दूध का अपवण,
उजले िो उनकेमन दपवण

॥ दोिा ॥

ज्योततशलिंग केजाप से,
तन मन तनमवल िोये ।
इसकेभततों का मनवा,
करे न वव शलत कोई ॥

सोमनाथ सुख करने वाला,
सोम केसंकट िरने वाला
दक्ष श्राप से सोम छुडाया,
सोम िै शिव की अद्भुत माया
ंद्र देव ने ककया जो वंदन,
सोम ने काटे दुःख केबंधन
ज्योततशलिंग िै सदा सुखदायी,
दीन िीन का सिायी
भक्तत भाव से इसे जो ध्याये,
मन वाणी िीतल तर जाये
शिव की आत्मा रूप सोम िै,
प्रभु परमात्मा रूप सोम िै
यिाँ उपासना ंद्र ने की,
शिव ने उसकी च ंता िर ली

इस तांथव को िोभा न्यारो,
शिव अमृत सागर भवभयधारी
ंद्र कुंड में जो भी नाये,

पाप से वे जन मुक्तत पाए
छ: कुटठ सब रोग शमटाये,
नाया कुंदन पल में बनावे
मशलकाजुवन िै नाम न्यारा,
शिव का पावन धाम प्यारा
काततवकेय िै जब शिव से रूठे,
माता वपता के रण िै छूते
श्री िैलेि पवत जा पिुं े,
कटट भय पावती केमन में
प्रभु कुमार से ली जो शमलने,
संग लना माना िंकर ने
श्री िैलेि पवत केऊपर,
गए जो दोनों उमा मिेश्वर
उन्िें देखकर काततवकेय उठ भागे,
और कुमार पवत पर ववराजे
यिाँ चश्रत िुए पारवती िंकर,
काम बनावे शिव का सुन्दर
शिव का अजुवन नाम सुिाता,
मशलका िै मेरी पारवती माता
शलंग रूप िो जिाँ भी रिते,
मशलकाजुवन िै उसको किते
मनवांतछत फल देने वाला,
तनबवल को बल देने वाला

॥ दोिा ॥

ज्योततशलिंग केनाम की,
ले मन माला फेर।

मनोकामना पूरी िोगी,
लगे न क्षक्षण भी देर॥

उज्जैन की नदी क्षक्षप्रा ककनारे,
ब्राह्मण थे शिव भतत न्यारे
दूिण दैत्य सताता तनसहदन,
गमव द्वेि हदखलाता क्जस हदन
एक हदन नगरी केनर नारी,
दुखी िो राक्षस से अततारी

परम शसद्ध ब्राह्मण से बोले,
दैत्य केडर से िर कोई डोले
दुटट तनसा र छुटकारा,
पाने को यज्ञ प्यारा
ब्राह्मण तप ने रंग हदखाए,
पृथ्वी फाड मिाकाल आये
राक्षस को िुंकार से मारा,
भय से भततों उबारा
आग्रि भततों ने जो कीन्िा,
मिाकाल ने वर था दीना
ज्योततशलिंग िो रिियाँ पर,
इच्छा पूणव करूँ यिाँ पर
जो कोई मन से मुझको पुकारे,
उसको दूंगा वैभव सारे
उज्जैनी राजा केपास मखण थी,
अद्भुत बडी िी ख़ास
क्जसे छीनने का िडयंि,
ककया था कल्यों ने िी शमलकर

मखण ब ाने की आिा में,
ििुभी कई थे अशभलािा में
शिव मंहदर में डेरा जमाकर,
खो गए शिव का ध्यान लगाकर
एक बालक ने िद िी कर दी,
उस राजा की देखा देखी
एक साधारण सा पत्थर लेकर,
पिुं ा अपनी कुहटया भीतर
शिवशलंग मान केवे पािाण,
पूजने लगा शिव भगवान्
उसकी भक्तत ुम्बक से,
खीं ेिी ले आये झट से भगवान्
ओमकार ओमकार की रट सुनकर,
प्रततक्टठत ओमकार बनकर
ओम्कारेश्वर विी िै धाम,
बन जाए त्रबगडे जिाँ पे काम
नर नारायण ये दो अवतार,
भोलेनाथ को था क्जनसे प्यार
पत्थर का शिवशलंग बनाकर,
नमः शिवाय की धुन गाकर

॥ दोिा ॥

शिव िंकर ओमकार का,

रट ले मनवा नाम ।
जीवन की ि र रा ि में,
शिवजी लेंगे काम ॥

नर नारायण ये दो अवतार,
भोलेनाथ को था क्जनसे प्यार
पत्थर का शिवशलंग बनाकर,
नमः शिवाय की धुन गाकर
कई विव तप ककया शिव का,
पूजा और जप ककया िंकर का
शिव दिवन को अंखखया प्यासी,
आ गए एक हदन शिव कैलािी
नर नारायण से शिव िैबोले,
दया केमैंने द्वार िैखोले
जो िो इच्छा लो वरदान,
भतत केबस में िैभगवान्
करवाने की भतत ने ववनती,
कर दो पवन प्रभु ये धरती
तरस रिा केदार का खंड ये,
बन जाये अमृत उत्तम कुंड ये
शिव ने उनकी मानी बात,
बन गया बेनी केदानाथ
मंगलदायी धाम शिव का,
गूंज रिा जिाँ नाम शिव का
कुम्भकरण का बेटा भीम,
ब्रह्मवार का िुआ बशल असीर
इंद्रदेव को उसने िराया,
काम रुप में गरजता आया
कैद ककया था राजा सुदक्षण,
कारागार में करे शिव पूजन
ककसी ने भीम को जा बतलाया,

क्रोध से भर केवो विाँ आया
पाचथवव शलंग पर मार िथोडा,
जग का पावन शिवशलंग तोडा
प्रकट िुए शिव तांडव करते,
लगा भागने भीम था डर के
डमरू धार ने देकर झटका,
धरा पे पापी दानव पटका
ऐसा रुप ववक्राल बनाया,

पल में राक्षस मार चगराया
बन गए भोले जी प्रयलंकार,
भीम मार केिुए भीमिंकर
शिव की कैसी अलौकक माया,
आज तलक कोई जान न पाया

िर िर िर मिादेव का मंि पढ़ें िर हदन रे
दुःख से पीडक मंहदर पा जायेगा ैन

परमेश्वर ने एक हदन भततों,
जानना ािा एक में दो को
नारी पुरुि िो प्रकटे शिवजी,
परमेश्वर केरूप िैं शिवजी
नाम पुरुि का िो गया शिवजी,
नारी बनी थी अम्बा िक्तत
परमेश्वर की आज्ञा पाकर,
तपी बने दोनों समाचध लगाकर
शिव ने अद्भुत तेज़ हदखाया,
पां कोि का नगर बसाया

ज्योततमवय िो गया आकाि,
नगरी शसद्ध िुई पुरुि केपास
शिव ने की तब सृक्टट की र ना,
पडा उस नगरों को किं बनना
पाठ पौि केकारण तब िी,
इसको किते िैं पं कोिी
ववश्वेश्वर ने इसे बसाया,
ववश्वनाथ ये तभी किलाया
जिाँ नमन जो मन से करते,
शसद्ध मनोरथ उनकेिोते
ब्रह्मचगरर पर तप गौतम लेकर,
पाए ककतनो केशसद्ध लेकर
तृिा ने कुछ ऋवि भटकाए,
गौतम केवैरी बन आये
द्वेि का सबने जाल त्रबछाया,
गौ ित्या का दोि लगाया
और किा तुम प्रायक्श् त करना,
स्वगवलोक से गंगा लाना
एक करोड शिवशलंग लगाकर,
गौतम की तप ज्योत उजागर
प्रकट शिव और शिवा विाँ पर,
माँगा ऋवि ने गंगा का वर
शिव से गंगा ने ववनय की,

ऐसे प्रभु में जिाँ न रिगी
ज्योततशलिंग प्रभु आप बन जाए,
कफर मेरी तनमवल धरा बिाये
शिव ने मानी गंगा की ववनती,

गंगा बानी झटपट गौतमी
त्रियंबकेश्वर िै शिवजी ववराजे,
क्जनका जग में डंका बाजे

॥ दोिा ॥

गंगा धर की अ वना,
करे जो मक्न् त लाये ।
शिव करुणा से उनपर,
आं कभी न आये ॥

राक्षस राज मिाबली रावण,
ने जब ककया शिव तप से वंदन
भये प्रसन्न िम्भू प्रगटे,
हदया वरदान रावण पग पढ़के
ज्योततशलिंग लंका ले जाओ,
सदा िी शिव शिव जय शिव गाओ
प्रभु ने उसकी अ वन मानी,
और किा रिे सावधानी
रस्ते में इसको धरा पे न धरना,
यहद धरेगा तो कफर न उठना
शिवशलंग रावण ने उठाया,
गरुडदेव ने रंग हदखाया
उसे प्रतीत िुई लघुिंका,
धीरज खोया उसने मन का
ववटणु ब्राह्मण रूप में आये,
ज्योततशलिंग हदया उसे थमाए
रावण तनभ्यात िो जब आया,

ज्योततशलिंग पृथ्वी पर पाया
जी भर उसने जोर लगाया,
गया न कफर से उठाया
शलंग गया पाताल में उस पल,
अध्अंगुल रिा भूशम ऊपर
पूरी रात लंकेि पछताया,
ंद्रकूप कफर कूप बनाया
उसमे तीथों का जल डाला,

नमो शिवाय की फेरी माला
जल से ककया था शलंग-अशभिका,
जय शिव ने भी दृश्य देखा
रत्न पूजन का उसे उन कीन्िा,
नटवर पूजा का उसे वर दीना
पूजा करर मेरे मन को भावे,
वैधनाथ ये सदा किाये
मनवांतछत फल शमलते रिंगे,
सूखे उपवन खखलते रिंगे
गंगा जल जो कांवड लावे,
भततजन मेरे परम पद पावे
ऐसा अनुपम धाम िै शिव का,
मुक्ततदाता नाम िै शिव का
भततन की यिाँ िरी बनाये,
बोल बम बोल बम जो न गाये

॥ दोिा ॥

बैधनाथ भगवान् की,
पूजा करो धर ध्याये ।

सफल तुम्िारे काज,
िो मुक्श्कलें आसान ॥

सुवप्रय वैभव प्रेम अनुरागी,
शिव संग क्जसकी लगी थी
ताड प्रताड दारुक अत्या ारी,
देता उसको िास था भारी
सुवप्रय को तनलवज्पुरी लेजाकर,
बंद ककया उसे बंदी बनाकर
लेककन भक्तत रुक निीं पायी,
जेल में पूजा रुक निीं पायी
दारुक एक हदन कफर वंिा आया,
सुवप्रय भतत को बडा धमकाया
कफर भी श्रद्धा िुई न वव शलत,
लगा रिा वंदन में िी च त
भततन ने जब शिवजी को पुकारा,
विाँ शसंघासन प्रगट था न्यारा
क्जस पर ज्योततशलिंग सजा था,
मटतक अश्ि िी पास पडा था
अस्ि ने सुवप्रय जब ललकारा,

दारुक को एक वार में मारा
जैसा शिव का आदेि था आया,
जय शिवशलंग नागेि किलाया
रघुवर की लंका पे ढ़ाई,
लशलता ने कला हदखाई
सौ योजन का सेतु बांधा,
राम ने उस पर शिव आराधा

रावण मार केजब लौट आये,
परामिव को ऋवि बुलाये
किा मुतनयों ने ध्यान दीजौ,
प्रभु ित्या का प्रायक्श् त्य कीजौ
बालू काली ने सीए बनाया,
क्जससे रघुवर ने ये ध्याया
राम ककयो जब शिव का ध्यान,
ब्रह्म दलन का धुल गया पाप
िर िर मिादेव जयकारी,
भूमण्डल में गूंजे न्यारी
जिाँ रना शिव नाम की बिती,
उसको सभी रामेश्वर किते
गंगा जल से जिाँ जो निाये,
जीवन का वो िर सख पाए
शिव केभततों कभी न डोलो,
जय रामेश्वर जय शिव बोलो

॥ दोिा ॥

पारवती बल्ल्भ िंकर,
किंजो एक मन िोये ।
शिव करुणा से उसका,
करे न अतनटट कोई ॥

देवचगरर िी सुधमाव रिता,
शिव अ वन का ववचध से करता
उसकी सुदेिा पत्नी प्यारी,
पूजती मन से तीथव पुरारी

कुछ-कुछ कफर भी रिती च ंततत,
तयूंकक थी संतान से वंच त
सुिमा उसकी बहिन थी छोटी,
प्रेम सुदेिा से बडा करती
उसे सुदेिा ने जो मनाया,

लगन सुधमाव से करवाया
बालक सुिमा कोख से जन्मा,
ाँद से क्जसकी िोती उपमा
पिले सुदेिा अतत ििावयी,
ईटयाव कफर थी मन में समायी
कर दी उसने बात तनराली,
ित्या बालक की कर डाली
उसी सरोवर में िव डाला,
सुिमा जपती शिव की माला
श्रद्धा से जब ध्यान लगाया,
बालक जीववत िो ल आया
साक्षात् शिव दिवन दीन्िे,
शसद्ध मनोरथ सारे कीन्िे
वाशसत िोकर परमेश्वर,
िो गए ज्योततशलिंग घुश्मेश्वर
जो ुगन लगे लगन केमोती,
शिव की विाव उन पर िोती
शिव िै दयालु डमरू वाले,
शिव िै संतन केरखवाले
शिव की भक्तत िै फलदायक,
शिव भततों केसदा सियक
मन केशिवाले में शिव देखो,

शिव रण में मस्तक टेको
गणपतत केशिव वपता िैं प्यारे,
तीनो लोक से शिव िैं न्यारे
शिव रणन का िोये जो दास,
उसकेगृि में शिव का तनवास
शिव िी िैं तनदोि तनरंजन,
मंगलदायक भय केभंजन
श्रद्धा केमांगे त्रबन पवत्तयां,
जाने सबकेमन की बततयां

॥ दोिा ॥

शिव अमृत का प्यार से,
करे जो तनसहदन पान ।
ंद्र ूड सदा शिव करे,
उनका तो कल्याण ॥

Shiv Amritwani

Part- 1

Kalpataru Punyaataama,
Prem Sudha Shiv Naam
Hitakaarak Sanjeevanee,
Shiv Chintan Aviraam
Patik Paavan Jaise Madhur,
Shiv Rasan Ke Gholak
Bhakti Ke Hansa Hee Chuge,
Motee Ye Anamol
Jaise Tanik Suhaaga,
Sone Ko Chamakae
Shiv Sumiran Se Aatma,
Adhbhut Nikharee Jaaye
Jaise Chandan Vrksh Ko,
Daste Nahin Hai Naag
Shiv Bhakto Ke Chole Ko,
Kabhee Lage Na Daag
Om Namah Shivaay,
Om Namah Shivaay!!

Daya Nidhi Bhooteshvar,
Shiv Hai Chatur Sujaan
Kan Kan Bheetar Hai,
Base Neel Kanth Bhagavaan
Chandr Chood Ke Trinetr,
Uma Pati Vishvaas
Sharanaagat Ke Ye Sada,
Kaate Sakal Klesh
Shiv Dvaare Prapanch Ka,

Chal Nahin Sakata Khel
Aag Aur Paanee Ka,

Jaise Hota Nahin Hai Mel
Bhay Bhanjan Nataraaj Hai,
Damaroo Vaale Naath
Shiv Ka Vandhan Jo Kare,
Shiv Hai Unake Saath

Om Namah Shivaay,
Om Namah Shivaay!!

Laakho Ashvamedh Ho,
Sou Ganga Snaan
Inase Uttam Hai Kahee,
Shiv Charanon Ka Dhyaan
Alakh Niranjan Naad Se,
Upaje Aatma Gyaan
Bhatake Ko Raasta Mile,
Mushkil Ho Aasaan
Amar Gunon Kee Khaan Hai,
Chit Shuddhi Shiv Jaap
Satsangatee Mein Baith Kar,
Karalo Pashchaataap
Lingeshvar Ke Manan Se,
Siddh Ho Jaate Kaaj
Namah Shivaay Ratata Ja,
Shiv Rakhenge Laaj

Om Namah Shivaay

Om Namah Shivaay!!

Shiv Charanon Ko Chhoone Se,
Tan Man Pavan Hoye
Shiv Ke Roop Anoop Kee,
Samata Kare Na Koee
Maha Bali Maha Dev Hai,
Maha Prabhu Maha Kaal
Asuraanakhandan Bhakt Kee,
Peeda Hare Tatkaal
Sharva Vyaapee Shiv Bhola,
Dharm Roop Sukh Kaaj
Amar Ananta Bhagavanta,
Jag Ke Paalan Haar
Shiv Karata Sansaar Ke,

Shiv Srshti Ke Mool
Rom Rom Shiv Ramane Do,
Shiv Na Jaeeo Bhool

Om Namah Shivaay,
Om Namah Shivaay!!

Part – 2 - 3
Shiv Amrt Kee Paavan Dhaara,
Dho Detee Har Kasht Hamaara
Shiv Ka Kaaj Sada Sukhadaayee,
Shiv Ke Bin Hai Kaun Sahaayee
Shiv Kee Nisadin Kee Jo Bhakti,
Denge Shiv Har Bhay Se Mukti
Maathe Dharo Shiv Naam Kee Dhulee,

Toot Jaayegee Yam Ki Soolee
Shiv Ka Saadhak Duhkh Na Maane,
Shiv Ko Harapal Sammukh Jaane
Saump Dee Jisane Shiv Ko Dor,
Loote Na Usako Paancho Chor
Shiv Saagar Mein Jo Jan Doobe,
Sankat Se Vo Hans Ke Joojhe
Shiv Hai Jinake Sangee Saathee,
Unhen Na Vipada Kabhee Sataatee
Shiv Bhaktan Ka Pakade Haath,
Shiv Santan Ke Sada Hee Saath
Shiv Ne Hai Brhmaand Rachaaya,
Teeno Lok Hai Shiv Ki Maaya
Jin Pe Shiv Kee Karuna Hotee,
Vo Kankad Ban Jaate Motee
Shiv Sang Taan Prem Kee Jodo,
Shiv Ke Charan Kabhee Na Chhodo
Shiv Mein Manava Man Ko Rang Le,
Shiv Mastak Kee Rekha Badale
Shiv Har Jan Kee Nas-Nas Jaane,
Bura Bhala Vo Sab Pahachaane
Ajar Amar Hai Shiv Avinaashee,
Shiv Poojan Se Kate Chauraasee
Yahaan Vahaan Shiv Sarv Vyaapak,
Shiv Kee Daya Ke Baniye Yaachak
Shiv Ko Deejo Sachchee Nishthaan,
Hone Na Dena Shiv Ko Rushta

Shiv Hai Shraddha Ke Hee Bhookhe,
Bhog Lage Chaahe Rookhe-Sookhe
Bhaavana Shiv Ko Bas Mein Karatee,

Preet Se Hee To Preet Hai Badhatee.
Shiv Kahate Hai Man Se Jaago,
Prem Karo Abhimaan Tyaago.

॥ Doha ॥

Duniya Ka Moh Tyaag Ke Shiv Mein Rahiye Leen.
Sukh-Duhkh Haani-Laabh To Shiv Ke Hee Hai Adheen..

Bhasm Ramaiya Paarvatee Vallbh,
Shiv Phaladaayak Shiv Hai Durlabh
Maha Kautukee Hai Shiv Shankar,
Trishool Dhaaree Shiv Abhayankar
Shiv Kee Rachana Dharatee Ambar,
Devo Ke Svaamee Shiv Hai Digambar
Kaal Dahan Shiv Roondan Poshit,
Hone Na Dete Dharm Ko Dooshit
Durgaapati Shiv Girijaanaath,
Dete Hai Sukhon Kee Prabhaat
Srshtikarta Tripuradhaaree,
Shiv Kee Mahima Kahee Na Jaatee
Divya Tej Ke Ravi Hai Shankar,
Pooje Ham Sab Tabhee Hai Shankar
Shiv Sam Aur Koee Aur Na Daanee,
Shiv Kee Bhakti Hai Kalyaanee
Kahate Munivar Gunee Sthaanee,
Shiv Kee Baaten Shiv Hee Jaane
Bhakton Ka Hai Shiv Priy Halaahal,
Nekee Ka Ras Baatante Har Pal
Sabake Manorath Siddh Kar Dete,
Sabakee Chinta Shiv Har Lete
Bam Bhola Avadhoot Savaroopa,

Shiv Darshan Hai Ati Anupa
Anukampa Ka Shiv Hai Jharana,
Harane Vaale Sabakee Trshna
Bhooto Ke Adhipati Hai Shankar,

Nirmal Man Shubh Mati Hai Shankar
Kaam Ke Shatru Vish Ke Naashak,
Shiv Mahaayogee Bhay Vinaashak
Roodr Roop Shiv Maha Tejasvee,
Shiv Ke Jaisa Kaun Tapasvee
Himagiree Parvat Shiv Ka Dera,
Shiv Sammukh Na Tike Andhera
Laakhon Sooraj Kee Shiv Jyoti,
Shastron Mein Shiv Upamaan Hoshee
Shiv Hai Jag Ke Srjan Haare,
Bandhu Sakha Shiv Isht Hamaare
Gau Braahman Ke Ve Hitakaaree,
Koee Na Shiv Sa Par Upakaaree

II Doha II

Shiv Karuna Ke Srot Hai Shiv Se Kariyo Preet.
Shiv Hee Param Puneet Hai Shiv Saache Man Meet..

Shiv Sarpo Ke Bhooshanadhaaree,
Paap Ke Bhakshan Shiv Tripuraaree
Jataajoot Shiv Chandrashekhar,
Vishv Ke Rakshak Kala Kaleshvar
Shiv Kee Vandana Karane Vaala,
Dhan Vaibhav Pa Jaaye Niraala
Kasht Nivaarak Shiv Kee Pooja,
Shiv Sa Dayaalu Aur Na Dooja
Panchamukhee Jab Roop Dikhaave,

Daanav Dal Mein Bhay Chha Jaave
Dam-Dam Damaroo Jab Bhee Bole,
Chor Nishaachar Ka Man Dole
Ghot Ghaat Jab Bhang Chadhaave,
Kya Hai Leela Samajh Na Aave
Shiv Hai Yogee Shiv Sanyaasee,
Shiv Hee Hai Kailaas Ke Vaasee
Shiv Ka Daas Sada Nirbheek,
Shiv Ke Dhaam Bade Ramaneek
Shiv Bhrkuti Se Bhairav Janme,
Shiv Kee Moorat Raakho Man Mein
Shiv Ka Archan Mangalakaaree,
Mukti Saadhan Bhav Bhayahaaree

Bhakt Vatsal Deen Dyaala, Gyaan Sudha Hai Shiv Krpaala
Shiv Naam Kee Nauka Hai Nyaaree,
Jisane Sabakee Chinta Taaree
Jeevan Sindhu Sahaj Jo Tarana,
Shiv Ka Harapal Naam Sumirana
Taarakaasur Ko Maarane Vaale,
Shiv Hai Bhakto Ke Rakhavaale
Shiv Kee Leela Ke Gun Gaana,
Shiv Ko Bhool Ke Na Bisaraana
Andhakaasur Se Dev Bachaaye,
Shiv Ne Adbhut Khel Dikhaaye
Shiv Charano Se Lipate Rahiye,
Mukh Se Shiv Shiv Jay Shiv Kahiye
Bhasmaasur Ko Var De Daala,
Shiv Hai Kaisa Bhola Bhaala
Shiv Teertho Ka Darshan Keejo,
Man Chaahe Var Shiv Se Leejo

II Doha II

Shiv Shankar Ke Jaap Se Mit Jaate Sab Rog.
Shiv Ka Anugrah Hote Hee Peeda Na Dete Shok..

Brhama Vishnu Shiv Anugaamee,
Va Hai Deen Heen Ke Svaamee
Nirbal Ke Balaroop Hai Shambhu,
Pyaase Ko Jalaroop Hai Shambhu
Raavan Shiv Ka Bhakt Niraala,
Shiv Ko Dee Dash Sheesh Ki Maala
Garv Se Jab Kailaash Uthaaya,
Shiv Ne Angoothe Se Tha Dabaaya
Duhkh Nivaaran Naam Hai Shiv Ka,
Ratn Hai Vo Bin Daam Shiv Ka
Shiv Hai Sabake Bhaagyavidhaata,
Shiv Ka Sumiran Hai Phaladaata
Shiv Dadheechi Ke Bhagavanta,
Shiv Kee Taree Amar Ananta
Shiv Ka Sevaadaar Sudarshan,
Saanse Kar Dee Shiv Ko Arpan
Mahaadev Shiv Aughadadaanee,
Baayen Ang Mein Saje Bhavaanee

Shiv Shakti Ka Mel Niraala,
Shiv Ka Har Ek Khel Niraala
Shambhar Naamee Bhakt Ko Taara,
Chandrasen Ka Shok Nivaara
Pingala Ne Jab Shiv Ko Dhyaaya,
Deh Chhootee Aur Moksh Paaya
Gokarn Kee Chan Chooka Anaaree,
Bhav Saagar Se Paar Utaaree
Anasuiya Ne Kiya Aaraadhan,

Toote Chinta Ke Sab Bandhan
Bel Patto Se Pooja Kare Chandaalee,
Shiv Kee Anukampa Huee Niraalee
Maarkandey Kee Bhakti Hai Shiv,
Durvaasa Kee Shakti Hai Shiv
Raam Prabhu Ne Shiv Aaraadha,
Setu Kee Har Tal Gaee Baadha
Dhanushabaan Tha Paaya Shiv Se,
Bal Ka Saagar Tab Aaya Shiv Se
Shree Krshn Ne Jab Tha Dhyaaya,
Dash Putron Ka Var Tha Paaya
Ham Sevak To Svaamee Shiv Hai,
Anahad Antaryaamee Shiv Hai

॥ Doha ॥

Deen Dayaalu Shiv Mere,
Shiv Ke Rahiyo Daas.
Ghat Ghat Kee Shiv Jaanate,
Shiv Par Rakh Vishvaas..

Parashuraam Ne Shiv Gun Gaaya,
Keenha Tap Aur Pharasa Paaya
Nirgun Bhee Shiv Shiv Niraakaar,
Shiv Hai Srshti Ke Aadhaar
Shiv Hee Hote Moortimaan,
Shiv Hee Karate Jag Kalyaan
Shiv Mein Vyaapak Duniya Saaree,
Shiv Kee Siddhi Hai Bhayahaaree
Shiv Hai Baahar Shiv Hee Andar,
Shiv Hee Rachana Saat Samundr

Shiv Hai Har Ik Ke Man Ke Bheetar,

Shiv Hai Har Ek Kan Kan Ke Bheetar
Tan Mein Baitha Shiv Hee Bole,
Dil Kee Dhadakan Mein Shiv Dole
‘Ham’kathaputalee Shiv Hee Nachaata,
Nayanon Ko Par Najar Na Aata
Maatee Ke Rangadaar Khilaune,
Saanval Sundar Aur Salone
Shiv Ho Jode Shiv Ho Tode,
Shiv To Kisee Ko Khula Na Chhode
Aatma Shiv Paramaatma Shiv Hai,
Dayaabhaav Dharmaatma Shiv Hai
Shiv Hee Deepak Shiv Hee Baatee,
Shiv Jo Nahin To Sab Kuchh Maatee
Sab Devo Mein Jyeshth Shiv Hai,
Sakal Guno Mein Shreshth Shiv Hai
Jab Ye Taandav Karane Lagata,
Brhmaand Saara Darane Lagata
Teesara Chakshu Jab Jab Khole,
Traahi Traahi Yah Jag Bole
Shiv Ko Tum Prasann Hee Rakhana,
Aastha Lagn Banaaye Rakhana
Vishnu Ne Kee Shiv Kee Pooja,
Kamal Chadhaoon Man Mein Sujha
Ek Kamal Jo Kam Tha Paaya,
Apana Sundar Nayan Chadhaaya
Saakshaat Tab Shiv The Aaye,
Kamal Nayan Vishnu Kahalaaye
Indradhanush Ke Rango Mein Shiv,
Santo Ke Satsangon Mein Shiv

॥ Doha ॥

Mahaakaal Ke Bhakt Ko Maar Na Sakata Kaal.
Dvaar Khade Yamaraaj Ko Shiv Hai Dete Taal..

Yagy Soodan Maha Raudr Shiv Hai,
Aanand Moorat Natavar Shiv Hai
Shiv Hee Hai Shmashaan Ke Vaasee,
Shiv Kaaten Mrtyulok Kee Phaansee

Vyaaghr Charam Kamar Mein Sohe,
Shiv Bhakton Ke Man Ko Mohe
Nandee Gan Par Kare Savaaree,
Aadinaath Shiv Gangaadhaaree
Kaal Ke Bhee To Kaal Hai Shankar,
Vishadhaaree Jagapaal Hai Shankar
Mahaasatee Ke Pati Hai Shankar,
Deen Sakha Shubh Mati Hai Shankar
Laakho Shashi Ke Sam Mukh Vaale,
Bhang Dhatoore Ke Matavaale
Kaal Bhairav Bhooto Ke Svaamee,
Shiv Se Kaampe Sab Phalagaamee
Shiv Hai Kapaalee Shiv Bhasmaangee,
Shiv Kee Daya Har Jeev Ne Maangee
Mangalakarta Mangalahaaree,
Dev Shiromani Mahaasukhakaaree
Jal Tatha Vilv Kare Jo Arpan,
Shraddha Bhaav Se Kare Samarpan
Shiv Sada Unakee Karate Raksha,
Satyakarm Kee Dete Shiksha
Ling Par Chandan Lep Jo Karate,
Unake Shiv Bhandaar Hain Bharate
64 Yoganee Shiv Ke Bas Mein,

Shiv Hai Nahaate Bhakti Ras Mein
Vaasuki Naag Kanth Kee Shobha,
Aashutosh Hai Shiv Mahaadeva
Vishvamoorti Karunaanidhaan,
Maha Mrtyunjay Shiv Bhagavaan
Shiv Dhaare Rudraaksh Kee Maala,
Neeleshvar Shiv Damaroo Vaala
Paap Ka Shodhak Mukti Saadhan,
Shiv Karate Nirdayee Ka Mardan

II Doha II

Shiv Sumarin Ke Neer Se Dhool Jaate Hai Paap.
Pavan Chale Shiv Naam Kee Udate Dukh Santaap..

Panchaakshar Ka Mantr Shiv Hai,
Saakshaat Sarveshvar Shiv Hai
Shiv Ko Naman Kare Jag Saara,

Shiv Ka Hai Ye Sakal Pasaara
Ksheer Saagar Ko Mathane Vaale,
Rddhi Seedhee Sukh Dene Vaale
Ahankaar Ke Shiv Hai Vinaashak,
Dharm-Deep Jyoti Prakaashak
Shiv Bichhuvan Ke Kundaladhaaree,
Shiv Kee Maaya Srshti Saaree
Mahaananda Ne Kiya Shiv Chintan,
Rudraaksh Maala Kinhee Dhaaran
Bhavasindhu Se Shiv Ne Taara,
Shiv Anukampa Aparampaara
Tri-Jagat Ke Yash Hai Shivajee,
Divy Tej Gaureesh Hai Shivajee
Mahaabhaar Ko Sahane Vaale,

Vair Rahit Daya Karane Vaale
Gun Svaroop Hai Shiv Anoopa,
Ambaanaath Hai Shiv Taparoopa
Shiv Chandeesh Param Sukh Jyoti,
Shiv Karuna Ke Ujjval Motee
Punyaatma Shiv Yogeshvar,
Mahaadayaalu Shiv Sharaneshvar
Shiv Charanan Pe Mastak Dhariye,
Shraddha Bhaav Se Archan Kariye
Man Ko Shivaala Roop Bana Lo,
Rom Rom Mein Shiv Ko Rama Lo
Maathe Jo Bhakt Dhool Dharenge,
Dhan Aur Dhan Se Kosh Bharenge
Shiv Ka Baak Bhee Banana Jaave,
Shiv Ka Daas Param Pad Paave
Dashon Dishaon Me Shiv Drshti,
Sab Par Shiv Kee Krpa Drshti
Shiv Ko Sada Hee Sammukh Jaano,
Kan-Kan Beech Base Hee Maano
Shiv Ko Saumpo Jeevan Naiya,
Shiv Hai Sankat Taal Khivaiya
Anjali Baandh Kare Jo Vandan,
Bhay Janjaal Ke Toote Bandhan

॥ Doha ॥

Jinakee Raksha Shiv Kare,

Maare Na Usako Koy.
Aag Kee Nadiya Se Bache,
Baal Na Baanka Hoy..

Shiv Daata Bhola Bhandaaree,

Shiv Kailaashee Kala Bihaaree
Sagun Brahm Kalyaan Karta,
Vighn Vinaashak Baadha Harta
Shiv Svaroopinee Srshti Saaree,
Shiv Se Prthvee Hai Ujiyaaree
Gagan Deep Bhee Maaya Shiv Kee,
Kaamadhenu Hai Chhaaya Shiv Kee
Ganga Mein Shiv , Shiv Me Ganga,
Shiv Ke Taare Turat Kusanga
Shiv Ke Kar Mein Saje Trishoola,
Shiv Ke Bina Ye Jag Nirmoola
Svarnamayee Shiv Jata Niraalee,
Shiv Shambhoo Kee Chhata Niraalee
Jo Jan Shiv Kee Mahima Gaaye,
Shiv Se Phal Manavaanchhit Paaye
Shiv Pag Pankaj Savarg Samaana,
Shiv Paaye Jo Taje Abhimaana
Shiv Ka Bhakt Na Duhkh Me Dolen,
Shiv Ka Jaadoo Sir Chadh Bole
Paramaanand Anant Svaroopa,
Shiv Kee Sharan Pade Sab Koopa
Shiv Kee Japiyo Har Pal Maala,
Shiv Kee Najar Me Teeno Qaala
Antar Ghat Me Ise Basa Lo,
Divy Jot Se Jot Mila Lo
Nam: Shivaay Jape Jo Svaasa, Pooreen Ho Har Man Kee Aasa

II Doha II

Paramapita Paramaatma Pooran Sachchidaanand.
Shiv Ke Darshan Se Mile Sukhadaayak Aanand..

Shiv Se Bemukh Kabhee Na Hona,
Shiv Sumiran Ke Motee Pirona

Jisane Bhajan Hai Shiv Ke Seekhe,
Usako Shiv Har Jagah Hee Dikhe
Preet Mein Shiv Hai Shiv Mein Preetee,
Shiv Sammukh Na Chale Aneeti
Shiv Naam Kee Madhur Sugandhee,
Jisane Mast Kiyo Re Nandee
Shiv Nirmal 'Nirdosh''Sanjay' Niraale,
Shiv Hee Apana Virad Sambhaale
Param Purush Shiv Gyaan Puneeta,
Bhakto Ne Shiv Prem Se Jeeta

II Doha II

Aantho Pahar Araadheey Jyotirling Shiv Roop.
Nayanan Beech Basaiye Shiv Ka Roop Anoop..

Ling May Saara Jagat Hain,
Ling Dharatee Aakaash
Ling Chintan Se Hot Hain Sab Paapo Ka Naash
Ling Pavan Ka Veg Hain,
Ling Agni Kee Jyot
Ling Se Paataal Hain Ling Varun Ka Strot
Ling Se Hain Vanaspati,
Ling Hee Hain Phal Phool
Ling Hee Ratn Svaroop Hain,
Ling Maatee Nirdhoop
Ling Hee Jeevan Roop Hain,
Ling Mrtyulingakaar
Ling Megha Ghanaghor Hain,

Ling Hee Hain Upachaar
Jyotirling Kee Saadhana Karate Hain Teeno Log
Ling Hee Mantr Jaap Hain,
Ling Ka Room Shlok
Ling Se Bane Puraan,
Ling Vedo Ka Saar
Ridhiya Siddhiya Ling Hain,
Ling Karata Karataar
Praatakaal Ling Poojiye Poorn Ho Sab Kaaj
Ling Pe Karo Vishvaas To Ling Rakhenge Laaj
Sakal Manorath Se Hot Hain Dukho Ka Ant
Jyotirling Ke Naam Se Sumirat Jo Bhagavant

Maanav Daanav Rshimuni Jyotirling Ke Daas
Sarv Vyaapak Ling Hain Pooree Kare Har Aas
Shiv Rupee Is Ling Ko Pooje Sab Avataar
Jyotirlingon Kee Daya Sapane Kare Saakaar
Ling Pe Chadhane Vaidy Ka Jo Jan Le Parasaad
Unake Hraday Mein Baje… Shiv Karoona Ka Naad
Mahima Jyotirling Kee Jaenge Jo Log
Bhay Se Mukti Paenge Rog Rahe Na Shob
Shiv Ke Charan Saroj Too Jyotirling Mein Dekh
Sarv Vyaapee Shiv Badale Bhaagy Teere
Daareen Jyotirling Pe Ganga Jal Kee Dhaar
Karenge Gangaadhar Tujhe Bhav Sindhu Se Paar
Chit Siddhi Ho Jae Re Lingo Ka Kar Dhyaan
Ling Hee Amrt Kalash Hain Ling Hee Daya Nidhaan

Om Nam: Shivaaye Om Nam:
Shivaaye Om Nam: Shivaaye Om Nam:
Shivaaye Om Nam: Shivaaye Om Nam:
Shivaaye Om Nam: Shivaaye Om Nam:
Shivaaye Om Nam: Shivaaye Om Nam:

Shivaaye Om Nam:

Part- 4 - 5
Jyotirling Hai Shiv Kee Jyoti, Jyotirling Hai Daya Ka Motee
Jyotirling Hai Ratnon Kee Khaan,
Jyotirling Mein Rama Jahaan
Jyotirling Ka Tez Niraala,
Dhan Sampati Dene Vaala
Jyotirling Mein Hai Nat Naagar,
Amar Gunon Ka Hai Ye Saagar
Jyotirling Kee Kee Jo Seva,
Gyaan Paan Ka Paoge Meva
Jyotirling Hai Pita Saamaan,
Sashti Isakee Hai Santaan
Jyotirling Hai Isht Pyaare,
Jyotirling Hai Sakha Hamaare
Jyotirling Hai Naareeshvar,
Jyotirling Hai Shiv Vimaleshvar
Jyotirling Gopeshvar Daata,
Jyotirling Hai Vidhi Vidhaata
Jyotirling Hai Sharrendashvar Svaamee,

Jyotirling Hai Antaryaamee
Satayug Mein Ratno Se Shobhit,
Dev Jaano Ke Man Ko Mohit
Jyotirling Hai Atyant Sundar,
Chhatta Isakee Brahmaand Andar
Treta Yug Mein Svarn Sajaata,
Sukh Sooraj Ye Dhyaan Dhvajaata
Sakl Srshti Man Kee Karatee,
Nisadin Pooja Bhajan Bhee Karatee
Dvaapar Yug Mein Paaras Nirmit,

Gunee Gyaanee Sur Nar Sevee
Jyotirling Sabake Man Ko Bhaata,
Mahamaarak Ko Maar Bhagaata
Kalayug Mein Paarthiv Kee Moorat,
Jyotirling Nandakeshvar Soorat
Bhakti Shakti Ka Varadaata,
Jo Daata Ko Hans Banata
Jyotirling Par Pushp Chadhao,
Kesar Chandan Tilak Lagao
Jo Jaan Karen Doodh Ka Arpan,
Ujale Ho Unake Man Darpan

II Doha II

Jyotirling Ke Jaap Se Tan Man Nirmal Hoye.
Isake Bhakton Ka Manava Kare Na Vichalit Koee..

Somanaath Sukh Karane Vaala,
Som Ke Sankat Harane Vaala
Daksh Shraap Se Som Chhudaaya,
Som Hai Shiv Kee Adbhut Maaya
Chandr Dev Ne Kiya Jo Vandan,
Som Ne Kaate Duhkh Ke Bandhan
Jyotirling Hai Sada Sukhadaayee,
Deen Heen Ka Sahaayee
Bhakti Bhaav Se Ise Jo Dhyaaye,
Man Vaanee Sheetal Tar Jaaye
Shiv Kee Aatma Roop Som Hai Prabhu Paramaatma Roop Som Hai
Yanha Upaasana Chandr Ne Kee,
Shiv Ne Usakee Chinta Har Lee
Isake Rath Kee Shobha Nyaaree,

Shiv Amrt Saagar Bhavabhayadhaaree
Chandr Kund Mein Jo Bhee Nahaaye,
Paap Se Ve Jan Mukti Pae
Chh: Kushth Sab Rog Mitaaye,
Naaya Kundan Pal Mein Banaave
Malikaarjun Hai Naam Nyaara,
Shiv Ka Paavan Dhaam Pyaara
Kaartikey Hai Jab Shiv Se Roothe,
Maata Pita Ke Charan Hai Chhoote
Shree Shailesh Parvat Ja Pahunche,
Kasht Bhay Paarvatee Ke Man Mein
Prabhu Kumaar Se Chalee Jo Milane,
Sang Chalana Maana Shankar Ne
Shree Shailesh Parvat Ke Oopar,
Gae Jo Donon Uma Maheshvar
Unhen Dekhakar Kaartikey Uth Bhaage,
Aur Umaar Parvat Par Viraaje
Janha Shrit Hue Paaravatee Shankar,
Kaam Banaave Shiv Ka Sundar
Shiv Ka Arjan Naam Suhaata,
Malika Hai Meree Paaravatee Maata
Ling Roop Ho Jahaan Bhee Rahate,
Malikaarjun Hai Usako Kahate
Manavaanchhit Phal Dene Vaala,
Nirbal Ko Bal Dene Vaala

II Doha II

Jyotirling Ke Naam Kee Le Man Maala Pher.
Manokaamana Pooree Hogee Lage Na Chin Bhee Der..

Ujjain Kee Nadee Kshipra Kinaare,

Braahman The Shiv Bhakt Nyaare
Dooshan Daity Sataata Nisadin,
Garm Dvesh Dikhalaata Jis Din
Ek Din Nagaree Ke Nar Naaree,
Dukhee Ho Raakshas Se Atihaaree
Param Siddh Braahman Se Bole,
Daity Ke Dar Se Har Koee Dole
Dusht Nisaachar Chhutakaara,

Paane Ko Yagy Pyaara
Braahman Tap Ne Rang Dikhae,
Prthvee Phaad Mahaakaal Aaye
Raakshas Ko Hunkaar Maara,
Bhay Bhakton Ubaara
Aagrah Bhakton Ne Jo Keenha,
Mahaakaal Ne Var Tha Deena
Jyotirling Ho Rahoon Yanha Par,
Ichchha Poorn Karoon Yanha Par
Jo Koee Man Se Mujhako Pukaare Usako Doonga Vaibhav Saare
Ujjainee Raaja Ke Paas Mani Thee Adbhut Badee Hee Khaas
Jise Chheenane Ka Shadayantr,
Kiya Tha Kalyon Ne Hee Milakar
Mani Bachaane Kee Aasha Mein,
Shatru Bhee Kaee The Abhilaasha Mein
Shiv Mandir Mein Dera Jamaakar,
Kho Gae Shiv Ka Dhyaan Lagaakar
Ek Baalak Ne Had Hee Kar Dee,
Us Raaja Kee Dekha Dekhee
Ek Saadhaaran Sa Patthar Lekar,
Pahuncha Apanee Kutiya Bheetar
Shivaling Maan Ke Ve Paashaan,

Poojane Laga Shiv Bhagavaan
Usakee Bhakti Chumbak Se,
Kheenche Hee Chale Aaye Jhat Se Bhagavaan
Omakaar Omakaar Kee Rat Sunakar, Pratishthit Omakaar Banakar
Omkaareshvar Vahee Hai Dhaam,
Ban Jae Bigade Vanha Pe Kaam
Nar Naaraayan Ye Do Avataar,
Bholenaath Ko Tha Jinase Pyaar
Patthar Ka Shivaling Banaakar,
Namah Shivaay Kee Dhun Gaakar

॥ Doha ॥

Shiv Shankar Omakaar Ka Rat Le Manava Naam.
Jeevan Kee Har Raah Mein Shivajee Lenge Kaam..

Nar Naaraayan Ye Do Avataar,
Bholenaath Ko Tha Jinase Pyaar

Patthar Ka Shivaling Banaakar,
Namah Shivaay Kee Dhun Gaakar
Kaee Varsh Tap Kiya Shiv Ka,
Pooja Aur Jap Kiya Shankar Ka
Shiv Darshan Ko Ankhiya Pyaasee Part- 1
Kalpataru Punyaataama,
Prem Sudha Shiv Naam
Hitakaarak Sanjeevanee, Shiv Chintan Aviraam
Patik Paavan Jaise Madhur,
Shiv Rasan Ke Gholak
Bhakti Ke Hansa Hee Chuge, Motee Ye Anamol
Jaise Tanik Suhaaga,
Sone Ko Chamakae
Shiv Sumiran Se Aatma, Adhbhut Nikharee Jaaye
Jaise Chandan Vrksh Ko,

Daste Nahin Hai Naag
Shiv Bhakto Ke Chole Ko, Kabhee Lage Na Daag
Om Namah Shivaay,
Om Namah Shivaay!!

Daya Nidhi Bhooteshvar, Shiv Hai Chatur Sujaan
Kan Kan Bheetar Hai,
Base Neel Kanth Bhagavaan
Chandr Chood Ke Trinetr, Uma Pati Vishvaas
Sharanaagat Ke Ye Sada,
Kaate Sakal Klesh
Shiv Dvaare Prapanch Ka, Chal Nahin Sakata Khel
Aag Aur Paanee Ka,
Jaise Hota Nahin Hai Mel
Bhay Bhanjan Nataraaj Hai, Damaroo Vaale Naath
Shiv Ka Vandhan Jo Kare,
Shiv Hai Unake Saath

Om Namah Shivaay, Om Namah Shivaay!!

Laakho Ashvamedh Ho,
Sou Ganga Snaan
Inase Uttam Hai Kahee, Shiv Charanon Ka Dhyaan
Alakh Niranjan Naad Se,
Upaje Aatma Gyaan
Bhatake Ko Raasta Mile,
Mushkil Ho Aasaan

Amar Gunon Kee Khaan Hai, Chit Shuddhi Shiv Jaap
Satsangatee Mein Baith Kar,
Karalo Pashchaataap
Lingeshvar Ke Manan Se, Siddh Ho Jaate Kaaj
Namah Shivaay Ratata Ja,

Shiv Rakhenge Laaj

Om Namah Shivaay
Om Namah Shivaay!!

Shiv Charanon Ko Chhoone Se, Tan Man Pavan Hoye
Shiv Ke Roop Anoop Kee,
Samata Kare Na Koee
Maha Bali Maha Dev Hai, Maha Prabhu Maha Kaal
Asuraanakhandan Bhakt Kee,
Peeda Hare Tatkaal
Sharva Vyaapee Shiv Bhola, Dharm Roop Sukh Kaaj
Amar Ananta Bhagavanta,
Jag Ke Paalan Haar
Shiv Karata Sansaar Ke, Shiv Srshti Ke Mool
Rom Rom Shiv Ramane Do,
Shiv Na Jaeeo Bhool

Om Namah Shivaay, Om Namah Shivaay!!

॥ Doha ॥

Shiv Amrt Ka Pyaar Se Kare Jo Nisadin Paan.
Chandrachood Sada Shiv Kare Unaka To Kalyaan..